Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

हिन्दी चित्रपट संगीत में संगीत रचनाकार श्री हंसराज बहल जी का सांगीतिक सफर

TANU CHAUDHARY[1] AND DR. HARVINDER SINGH[2]
1 Research Scholar, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana
2 Assistant Professor, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana

सारांश: *संगीत के बिना चित्रपट की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिस प्रकार रक्त के बिना मानवीय शरीर का अस्तित्व सम्भव नहीं उसी प्रकार संगीत के बिना चित्रपट असम्भव है। अर्थात् चित्रपट व संगीत का सम्बन्ध मांस व नाखुन की भांति है, दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। किसी भी फिल्म की सफलता में उस फिल्म के संगीत निर्देशक का अह्म योगदान रहता है। भारतीय सिने जगत के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि 1931 में प्रथम सवाक चलचित्र 'आलम आरा' के निर्माण से वर्तमान तक निर्मित समस्त फिल्मों में अनेक संगीत रचनाकारों ने अपना बेहतरीन योगदान दे कर संगीत के खजाने को समृद्ध बनाया। उन महान् संगीत रचनाकारों में से एक नाम है - श्री हंसराज बहल। जिन्हें उन के समकालीन कलाकारों, संगीतज्ञों, गायकों द्वारा श्रद्धापूर्वक 'मास्टर जी' कह कर सम्बोधित किया जाता था। श्री हंसराज बहल ने अपने 40 वर्षों के कार्यकाल में लगभग 61 हिन्दी व लगभग 25 पंजाबी फिल्मों में संगीत निर्देशन करते हुए लगभग 400 हिन्दी व लगभग 200 पंजाबी भाषी गीतों को स्वरबद्ध करके संगीत की सेवा की। उन्होनें मोहम्मद रफी, लता मंगेश्कर, आशा भौंसले, महिन्द्र कपूर, शमशाद बेगम, मधुबाला झावेरी, मीनू प्रशोत्तम, सुमन कल्याणपुर, दिलजीत कौर, सुरिन्द्र कौर आदि गायकों से सर्वोत्तम गीत गवाए। हिन्दी चित्रपट संगीत में श्री हंसराज बहल जी के सांगीतिक सफर का अवलनोकन करना प्रस्तुत शोध का विषय रहेगा।*

मुख्य बिन्दु: *चित्रपट, अस्तित्व, संगीत, रचनाकार, भूमिका, समृद्ध, सर्वोत्तम*

परिचय

श्री हंसराज बहल जी का जन्म 19 नवम्बर 1916 को हुआ।[1] उन के जन्म स्थान के विषय में मुख्य रूप से दो मत प्राप्त होते हैं। प्रथम मत के अनुसार उन का जन्म अम्बाला (वर्तमान हरियाणा) में हुआ।[2] द्वितीय मत के अनुसार उनका जन्म रावलपिंडी के समीप शेखुपूरा (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ।[3] इस भ्रम को दूर करते हुए श्री चन्द्र बहल (श्री हंसराज बहल के पुत्र) ने शोधार्थी को साक्षात्कार के दौरान स्पष्ट किया कि उनके पिता जी का जन्म स्थान शेखूपुरा है। श्री हंसराज बहल जी के पिता का नाम श्री निहाल चन्द बहल व माता जी का नाम श्रीमती शान्ती देवी था। श्री चन्द्र बहल जी के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार श्री हंसराज बहल जी ने औपचारिक शिक्षा (स्कूली शिक्षा) प्राप्त नहीं की हुई थी। वे केवल कुछ उर्दू जानते थे। मुम्बई आने के पश्चात् उन्होनें अंग्रेजी में अपना नाम लिखना (हस्ताक्षर करना) सीखा। श्री हंसराज बहल ने संगीत की शिक्षा पण्डित चिरंजीवी लाल 'जिज्ञासु' (अम्बाला) से प्राप्त की।[4]

हिन्दी चित्रपट संगीत में श्री हंसराज बहल जी का सांगीतिक सफर

सन् 1944 में श्री हंसराज बहल अपने भाई गुलशन बहल व अपने गीतकार मित्र वर्मा मलिक के साथ मुम्बई आ गए।[5] श्री हंसराज बहल जी को संगीत की सभी विद्याओं का गहरा ज्ञान व समझ थी। उन्होनें हिन्दी सिने संगीत को समृद्ध करने हेतु अपना उत्कृष्ट योगदान दिया।

श्री हंसराज बहल को मुम्बई में 'बॉम्बे टाकिज' में ट्रायल उपरांत नौकरी मिल गई। कुछ समय के पश्चात् प्रकाश पिक्चर्स की 'हमारा संसार' फिल्म में संगीतकार प0. गोबिन्द राम के साथ सहायक संगीत निर्देशक के रूप में आप ने काम किया। आप ने 'नवयुग चित्रपट' में भी काम किया। सन् 1946 में फिल्म निर्माता श्री आद्शिन ईरानी की फिल्म 'पुजारी' में एक स्वतंत्र संगीतकार के रूप में पहला मौका मिला। अपनी पहली ही फिल्म में श्री हंसराज बहल ने एक क्रांतिकारी कदम उठाते हुए अभिनेत्री मधुबाला जो कि फिल्म 'पुजारी' में बेबी मुमताज के नाम से बाल कलाकार के तौर पर रोल कर रही थी की आवाज में एक गीत 'भगवान मेरे ज्ञान के दीपक को जला दे' गवाया। उस समय किसी को यह आभास नहीं था कि यह बाल कलाकार बड़ी हो कर 'मधुबाला' कहलाएगी और दुनिया में 'भारतीय पर्दे' की 'वीनस' के नाम से प्रसिद्धी प्राप्त करेगी।

अपनी दूसरी फिल्म 'ग्वालिन' (1946) में बहल जी ने मुकेश और सुशीला रानी से एक युगल गीत 'नजर लगत तोरी छलैया मोरे गोरे बदन को' गवाया। यह गीत अत्यंत प्रसिद्ध हुआ। इस गीत की गायिका सुशीला रानी ''जयपुर घराने' की शास्त्रीय संगीत की जानी मानी गायिका

थी। इस गीत के गीतकार पंडित इन्द्रा एवं वाली साहिब थे। अपने कार्यकाल के आरंभिक काल में बहल जी ने मुकेश की आवाज का काफी प्रयोग किया।

तत्पश्चात् चंदु लाल शाह जी ने बहल जी का परिचय 'रणजीत स्टूडियोज' से करवाया एवं श्री हंसराज बहल ने 'रणजीत स्टूडियोज' की चार फिल्मों 'छीन ले आजादी', 'फुलवाड़ी', 'लाखों में एक', 'दुनिया एक सराय' में संगीत निर्देशन किया। फिल्म 'लाखों में एक' बहल जी की प्रथम सफल फिल्म कही जा सकती है। सन् 1947-1948 में बहल जी की फिल्में 'चुनरिया', 'मिट्टी के खिलौने', 'परदेसी मेहमान', 'सत्य नारायण' पर्दे पर आई। फिल्म 'चुनरिया' में लता जी ने श्री हंसराज बहल के बेहतरीन निर्देशन में 'दिले-नशाद को जीने की हसरत हो गई तुमसे' गाया। यह गीत अत्यंत प्रसिद्ध हुआ। इस फिल्म के पश्चात् बहल साहब की गिनती उच्च दर्जे के संगीत निर्देशकों में की जाने लगी। तत्पश्चात् फिल्म 'गुण सुंदरी' में लीला मेहता व ए.आर. मेहता की आवाज में 'होटल का किनारा हो नजारा प्यारा-प्यारा हो' श्रताओं में बहुत प्रसिद्ध हुआ। सन् 1949 में फिल्म 'करवट', 'भिखारी' एवं 'रूमाल' में बहल जी ने सुंदर संगीत निर्देशन किया। फिल्म 'रूमाल' में मोहम्मद रफी की आवाज में गीत 'दिल टूटा और अरमान लूटे' अत्यंत लोकप्रिय हुआ।

जब मास्टर गुलाम हैदर भारत छोड़ कर पाकिस्तान चले गए तो उनकी अधूरी फिल्म 'कनीज़' (1949) के शेष दो गीतों को बहल जी ने स्वरबद्ध किया एवं फिल्म का पृष्ठभूमि संगीत पूरा किया।

बहल जी द्वारा फिल्म 'चकोरी' (1949) में लता जी की आवाज में 'हाय चंदा गया परदेस' शास्त्रीय संगीत में स्वरबद्ध की गई बेहतरीन रचना है। बहल जी की अगली फिल्म 'रात की रानी' में मोहम्मद रफी की आवाज में गज़ल 'जिन रातों में नींद उड़ जाए' अत्यंत लोकप्रिय हुआ। यह मुशायरा शैली में गाया गया बेहतरीन गीत है। फिल्म 'जेवरात' (1949) में रफी व लता की आवाज में पारम्परिक शैली की धुन और 'ला ला ला' की आधुनिक छाप के साथ 'साजन की ले के ओट, हाथों में हाथ ले के' अत्यंत सुन्दर रचना कही जा सकती है। यह गीत अत्यंत लोकप्रिय हुआ।

सन् 1950-1953 तक के बहल जी के संगीत निर्देशन में कई लोकप्रिय फिल्में जैसे 'बेकसूर', 'अपनी इज्जत', 'जग्गू', 'गुलनार', 'नखरे', 'मोती महल', 'लंका दहन', 'ममता', 'खैबर', 'खुल जा सिम सिम', 'मल्लिका', 'इन्कलाब' प्रदर्शित हुई।

फिल्म 'बेकसूर' में संगीत देते हुए अनिल जी विश्वास के साथ रफी व लता की आवाज में दो लोकप्रिय युगल गीत', 'अक्खियाँ गुलाबी जैसे मद की है प्याली', 'हंस के न तीर चलाना' स्वरबद्ध किए। फिल्म 'गुलनार' में बहल जी ने जीनत बेगुन की आवाज का प्रयोग किया। बहल जी ने इसी दौरान फिल्म ', 'खिलाड़ी', 'शान', 'राजपूत', 'मोतीमहल', 'रेशम' में फिल्म की नायिका सुरैया से ही गाने गवाए। इस दौर में सुरैया की आवाज में 'चाहत को भुलाना मुश्किल है', 'दिल नशाद न से' (खिलाड़ी) बहल जी द्वारा स्वरबद्ध की गई सुन्दर रचनाएं हैं। फिल्म 'राजपूत' का गीत 'रास्ते पे हम खड़े हैं दिल बेकरार ले कर' और 'मोती महल' का रूठलाता नटखट गीत 'कभी न बिगड़े किसी की मोटर रास्ते में' अत्यंत लोकप्रिय हुए।

फिल्म 'पैन्शनर' (1954) में बहल जी ने रफी की आवाज में 'नैना गवाये साजन ना आये' एवं लता की आवाज में 'दिल की दुनिया लूट कर ओ जाने वाले' व आशा भौंसले की आवाज में अरबी संगीत पर आधारित 'मेरी झुकी झुकी आँखों में प्यार' अत्यंत लोकप्रिय गीतों को स्वरबद्ध किया।

सन् 1954 में बहल परिवार ने श्री हंसराज बहल व उनके छोटे भाई श्री गुलशन बहल की देखरेख में अपने पिता की याद में अपनी फिल्म कम्पनी 'एन.सी. फिल्मस्' की स्थापना की। इस कम्पनी की पहली फिल्म 'लालपरी' थी। इस फिल्म में तलत महमूद व गीता दत्त द्वारा गाया गया गीत 'कह रही है धड़कनें पुकार कर' अत्यंत लोकप्रिय हुआ। अगले दो वर्ष तक श्री हंसराज बहल जी ने अपनी घरेलू कम्पनी 'एन.सी. फिल्मस्' के लिए ही संगीत निर्देशन किया।

सन् 1957 में फिल्म 'चंगेज खान' में बहल जी ने रफी की आवाज में 'राग सोहवी' पर आधारित 'मोहब्बत जिंदा रहती है, मोहब्बत मर नहीं सकती' अति लोकप्रिय गीत की रचना की। सन् 1958 में फिल्म 'मिस बोम्बे' में बहल जी ने भंगड़ा शैली के गीतों को संगीतबद्ध किया। सन्' (1959) में फिल्म 'मिलन' में सफल संगीत निर्देशन के कारण बहल जी को सर्वोच्च दर्जे पर पहुंचा दिया।

बहल जी ने 60 के दशक में 'मिस गुड नाईट', 'मुड़-मुड़ के ना देख', 'एक था अली बाबा', 'दारा सिंह', 'एक दिन का बादशाह', 'रूसतम-ए-हिन्द', 'सिकन्दरे-ए-आजम', 'तीन सरदार', 'सुनेहरा जाल', 'मुझे सीने से लगा लो' आदि फिल्मों को अपने प्रभावशाली संगीत निर्देशन से श्रृंगारा। फिल्म 'सिकन्दरे-ए-आजम' का देशभक्ति गीत 'जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती हैं बसेरा वो भारत देश है मेरा' बहल जी द्वारा स्वरबद्ध की गई एक अमर रचना है। यह गीत अत्याधिक प्रसिद्ध हुआ और आज भी देशभक्ति के कार्यक्रमों में खूब सुना जाता है।

फिल्म 'दो आंखे' (1974) में मोहम्मद रफी द्वारा गाया गया गीत 'कमल के फूल जैसा बदन तेरा चिकना' बहल जी द्वारा स्वरबद्ध की गई अत्याधिक प्रसिद्ध रचना है। फिल्म 'बदमाशों का बदमाश' (1979) में बहल जी द्वारा सुन्दर संगीत निर्देशन किया गया। श्री हंसराज बहल जी की अन्तिम हिन्दी फिल्म 'इंसाफ का खून' उन के देहान्त' (26 मई, 1984) के पश्चात् सन् 1988 में प्रदशित हुई।

उपसंहार

इस बात में कोई सन्देह नहीं कि श्री हंसराज बहल हिन्दी सिने संगीत के बेताज बादशाह थे। उन्होनें बेहतरीन संगीत की रचना करते हुए शानदार संगीतमय सफर तय किया। "कभी शराब को हाथ न लगाने वाले हंस राज बहल 20 मई 1984 को कैंसर की बिमारी से जूझते हुए चिरनिद्रा में लीन हो गए।"[6] आप का हिन्दी सिने संगीत में योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। हिन्दी चित्रपट संगीत के खजाने में श्री हंसराज बहल द्वारा रचे गीत बहुमूल्य नगीनों की तरह जगमगाते रहेंगे।

संदर्भ सूची

1 पंकजराग, 'धुनों की यात्रा', द्वितीय संस्करण राज कमल प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 292
2 मधुरानी शुक्ला, 'भारतीय सिनेमा की विकास यात्रा' कनिष्क पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 412
3 जावेद हमीद, 'हिन्दी सिनेमा के सदाबहार संगीतकार', अतुल्य पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2019, पृष्ठ 110
4 बक्शी सिंह, आदिल, 'पंजाबी संगीतकार', नवीन प्रकाशन अमृतसर, 1978, पृष्ठ 29
5 त्रिनेत्रा बाजपाई एवं अनशुला बाजपाई 'Those Magnificent Music Makers, National Publishing House, New Delhi 2012, पृष्ठ 205
6 हंसराज बहल- एक भूले बिसरे संगीतकार, 'महफिल में मेरी', 20 मई 2020